

सुना है कि पीर बेद और ग्रीको दोनों यहाँ आये हुए हैं। या अभी तक  
प्रभावित नहीं हुई। शायद वे भी व्यस्त होंगे। या संभलें होंगे कि हम गौरवियों  
गये हैं।

गानिन ही है। अब धा की चिन्ताएँ समाप्त हो चुकी हैं। या वे भी बड़ी  
थकी हुई हैं। गौरवियों की आवाज़ों से उन्हें शायद शक्ति मिले।

तब हो चुका है कि अब हम दोनों आल आयेगे। हमनवाँ से १२.५० की री  
तक। अभी सिर्फ़ लिख नहीं किया है। या सादा पन्ना है। (करीब गाँधी  
इन्हे प्रदर्शनी देना चाहती हैं। इनकी इच्छा है कि काशमीर जाका आगम करे।

अस आज इतना ही। रात के दो बजे चूके हैं। फल बहुत कुछ कला है, आज  
की तरह ...।

बहुत थक और लड़ है आया -

